उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8जी थ्सववतए ज्ञपेंद डंदकप ठींदए टपइीनजप ज्ञींदकए ळवउजप छंहंतए स्नबादवू. 226010

पत्रांकः 1645/एन0आर0एम0/सी0डब्ल्यू0डब्ल्यू0जी0/आर0एल0/2017 दिनाँकः 8.3.2017

दिनाँक : 8 मार्च, 2017 समय : 12.00 बजे

स्थान : उपकार सभाकक्ष उपस्थितिः संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की तृतीय बैठक की संस्तुतियाँ

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की वर्ष 2017 की तृतीय बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनाँक 8 मार्च, 2017 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान विभाग, अमौसी, लखनऊ, च.शे.आ. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के तिलहन वैज्ञानिकय न. दे. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक, दलहन वैज्ञानिकय स.व.प. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय मेरठ के मौसम वैज्ञानिकय भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, गन्ना विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य विभाग, रेशम विभाग, रिमोट सेंसिंग, वन विभाग, इफ्को किसान संचार लि., लखनऊ के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार इस सप्ताह (दिनाँक 8 मार्च से 14 मार्च, 2017 तक) प्रदेश के सभी अंचलों यथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य उत्तर प्रदेश, बुन्देल खण्ड व पूर्वी उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में हल्के से मध्यम बादल छाये रहेंगे। बुन्देलखण्ड अंचल में 9–11 मार्च के मध्य हल्की वर्षा होने की सम्भावना है जबकि अन्य सभी अंचलों में 9–12 मार्च के मध्य गरज–चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में 9–11 मार्च के मध्य तथा पूर्वी उत्तर के कुछ क्षेत्रों में 10–11 मार्च के मध्य ओले पड़ने की भी सम्भावना है। उत्तर प्रदेश के सभी अंचलों में सप्ताह के प्रारम्भिक चार दिनों में हवाएँ मध्यम से तेज गति (6–15 किमी./घंटे) से मुख्यतया दक्षिणी–पूर्वी एवं अंतिम तीन दिनों में उत्तरी–पश्चिमी दिशा में चलने की सम्भावना है। प्रदेश के सभी अंचलों में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान सप्ताह के प्रारम्भ के तीन दिनों में सामान्य रहने की सम्भावना है वहीं अंतिम चार दिनों में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान के सामान्य से 2–3 डिग्री सेंटीग्रेड कम रहने की सम्भावना है। प्रदेश में औसत रूप से वातावरण में नमी का प्रतिशत प्रातःकाल 70–80 एवं दोपहर में 55–65 प्रतिशत के मध्य बने रहने की सम्भावना है। कुल मिलाकर इस सप्ताह के प्रारम्भिक चार दिनों में प्रदेश के सभी अंचलों में तेज हवाएँ एवं गरज चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। अन्य दिनों में मौसम शुष्क रहेगा।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैंः-

- इस सप्ताह वर्षा की सम्भावना के दृष्टिगत किसी भी फसल में सिंचाई न करें।
- वर्षा से होने वाली सम्भावित क्षति से बचाव हेतु तैयार फसल को काटकर सुरक्षित रख लें।
- इस सप्ताह वर्षा के दृष्टिगत कीट व रोग दिखाई देने पर ही कीटनाशी अथवा रोगनाशी का प्रयोग दिनांक 13 मार्च के बाद ही आसमान साफ होने पर करें।
- आकस्मिक वर्षा एवं ओलावृष्टि के कारण यदि किसी क्षेत्र में नुकसान होता है तो सम्बन्धित जनपद के जिला अधिकारी की अध्यक्षता में गठित कमेटी की तत्काल बैठक कराकर उप कृषि निदेशक क्षेत्र में हुए नुकसान का आंकलन करते हुए नियमानुसार तात्कालिक सहायता प्राप्त करने हेतु कार्यवाही करें।

गेहूँ की खेती

- इस सप्ताह वर्षा की सम्भावना के दृष्टिगत गेहूँ में टॉप ड्रेसिंग न करें।
- सिंचित व असिंचित दोनों प्रकार के गेहूँ में अनावृत्त कंडुवा से रोगग्रस्त बाली दिखाई देने पर उसे लिफाफे में डालकर काट लें तथा जमीन में गाड़ दें। गेहूँ की बोई गई प्रजाति की शुद्धता बनाये रखने के लिये रोगिंग (अवांछित पौधों को निकाल दें) करें।
- गेरूई तथा पत्ती धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली./हे. लगभग 750 ली. पानी में घोलकर आसमान साफ होने की स्थिति में छिड़काव करें।
- गेहूं की खड़ी फसल में चूहों द्वारा क्षति पहुंचाये जाने की दशा में रोकथाम हेतु जिंक फास्फाइड अथवा बेरियम कार्बोनेट में बने जहरीले चारे का प्रयोग करें।

दलहनी फसलों की खेती

- चना व मसूर में फलीबेधक कीट व अर्धकुण्डलीकार कीट के नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी.टी) की कर्स्टकी प्रजाति 1.0 किग्रा अथवा एजाडिरैक्टिन 0.03 प्रतिशत अथवा डब्लू.एस.पी. 2.5-3.0 किग्रा. अथवा एन.पी.बी. ऑफ हेल्को वरपा आर्मीजेरा 2 प्रतिशत ए.एस. 250-300 मिली. अथवा फेनवेलरेट 20 प्रतिशत ई.सी. 1 ली. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 2.0 लीटर को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।
- अरहर में फलीबेधकों से 5 प्रतिशत प्रकोपित फली पाये जाने पर बी.टी. 5 प्रतिशत डब्लू.पी. 1. 5 कि.ग्रा. या इण्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 400 मि.ली. या क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.50 ली. या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मिली. 500-700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- यदि राई, सरसों परिपक्व हो गई हो तो सम्भावित वर्षा के दृष्टिगत कटाई कर सुरक्षित स्थान पर रख लें अन्यथा वर्षा से नुकसान होगा।

जायद फसलों की खेती

- उर्द की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत पीला चित्रवर्ण अवरोधी (मोजैक) प्रजातियों यथा माश–479, आजाद उर्द–2, शेखर–2, आई.पी.यू. 2–43, सुजाता, नरेन्द्र उर्द–1, आजाद उर्द–1, उत्तरा, टा–9 आदि की बुआई करें। यदि बीज शोधित न हो तो 2.5 ग्रा. थीरम अथवा 2 ग्रा. थीरम एवं 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम या 5–10 ग्रा. ट्राईकोडर्मा प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधित करें। नरेन्द्र उर्द–1 की बुआई अवश्य कर लें।
- मूंग की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु अधिक उपज वाली व पीला मोजैक अवरोधी संस्तुत प्रजातियों यथा मालवीय ज्योति, मालवीय जागृति, मालवीय जनप्रिया, मेहां, पूसा विशाल, टी.एम.वी.–37, मालवीय जनचेतना, नरेन्द मूंग–1, के.एम.–2241, एच.यू.एम.–16 की बुवाई प्रारम्भ करें।
- सूरजमुखी की संकुल किस्मों मॉडर्न, सूर्या व संकर किस्मों के.वी.एस.एच.–1, एस.एच.–3322, एम.एस.एफ.एच.–17 व वी.एस.एफ.–1 की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- ग्रीष्मकालीन मूंगफली की संस्तुत किस्मों यथा डी.एच.–86, आई.सी.जी.एस.–44, आर–9251, आर–8808, आई.सी.जी.एस.–1, आई.सी.जी.वी.–93468 (अवतार), टी.ए.जी.–24 व टी.जी. –37ए की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- बाजरा की संस्तुत संकुल किस्मों आई.सी.एम.वी.–221, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171, पूसा कम्पोजिट–383 तथा संकर किस्मों यथा 86 एम.–52, जी.एच.बी.–526, जी.एच.बी.–558 एवं पी.बी.–180 की बुआई करें।
- ज्वार की एकल कटाई हेतु संस्तुत प्रजातियों पी.सी.– 6,9,23, एच.सी.–171, 260, यू.पी. चरी–12, राज चरी–1,2 तथा बहु कटाई वाली प्रजातियों एस.एस.जी.–998, 855, को.–27, पंत चरी–5 की बुवाई करें।
- लोबिया की उन्नत किस्मों कोहिनूर, श्वेता, बी.एल.–1, बुन्देल लोबिया–2,3, जी.एफ.सी.–1,2,3 एवं 4, यू.पी.सी.–618, 622 तथा ई.सी.–4246 की बुवाई करें।
- मक्का (जियामेज) की उन्न्त किस्मों अफ्रीकन टाल, विजन कंपोजिट, मोती कंपोजिट, जवाहर कंपोजिट, बी.एल.–52, ए.पी.एफ.एम.–8, प्रताप मक्का चरी–6 की बुवाई करें।
- हरे चारे के लिये गिनी घास की किस्मों बुन्देल गिनी–1,2, मैकौनी, हामिल, को.1, को.2, पी. जी.जी.1,9, 19, 101 तथा गिनी गटन–1,9 के बीज की बुवाई करें।

गन्ना की खेती

- स्वस्थ एवं ताजा गन्ने (6 टन/हे.) को तीन आँख वाले टुकड़ों में काटकर प्रदेश की सभी चीनी मिलों के गेट पर निःशुल्क उपलब्ध एम.एच.ए.टी. प्लाण्ट से उपचार कराकर ही बुवाई करें अथवा 200 ग्राम कार्बेन्डाजिम/हे. का 100 लीटर पानी में बने घोल में 30 मिनट तक डुबाकर ही बुवाई करें।
- सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के लिये संस्तुत प्रजातियों यथा शीघ्र पकने वाली प्रजातियों– को.शा. 8436, को.शा. 88230, को.शा. 95255, को.शा. 96268, को.शा. 08272, को. 0238, को. 0118, को.से. 98231, को.से. 95422, को.से. 03234, को. 98014, यू.पी. 05125

तथा मध्य देर से पकने वाली प्रजातियों– को.शा. 8432, को.शा. 97264, को.शा. 96275, को.शा. 97261, को.शा. 98259, को.शा. 99259, को.से. 01434, यू.पी. 0097, को.शा. 08279, को.शा. 08276, को.शा. 11453 व को.शा. 12232 में से उपलब्धतानुसार प्रजातियों का चयन करें।

- उ.प्र. के सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद हेतु संस्तुत को.शा. 07250 प्रजाति की बुआई करें।
- जल भराव वाले क्षेत्रों में फरवरी मार्च में प्रत्येक दशा में बुआई कर देनी चाहिए जल भराव हेतु यू.पी. 9530, को.लख 94184 व को.से. 96436 प्रजातियों में एक या दो का चुनाव करें।
- अच्छी बावक फसल की ही पेड़ी रखें। पेड़ी रखी जाने वाली बावक फसल में रिक्त स्थान 10–15 प्रतिशत से अधिक नहीं हों। यह रोगों तथा प्लासी बेधक व गुरूदासपुर बेधक से पूर्णतः मुक्त हों। शल्क कीट तथा अन्य बेधकों से भी अपेक्षाकृत कम आक्रांत हो। जल–भराव वाली बावक फसल की पेड़ी न रखें क्योंकि इसकी पैदावार कम होती है।
- बसन्त कालीन गन्ने में मूँग, उर्द व लोबिया की उपयुक्त प्रजातियों की सहफसल ले सकते हैं। इन्हें बोने से पूर्व राईजोबियम कल्चर (1 किग्रा./हे.) से उपचारित करें।

सब्जियों की खेती

- कृषक भिण्डी, करेला, लौकी, काशीफल, ककड़ी एवं तरबूज की बुआई आसमान साफ होने की दशा में करें।
- वर्षा के दृष्टिगत परिपक्व आलू की खुदाई कर लें व छायादार स्थान पर सुरक्षित कर लें।
- बीज हेतु आलू के मध्यम आकार के कन्दों का भण्डारण मध्य मार्च तक अवश्य कर लें।
- आलू को भण्डारण के पूर्व कन्दों की छँटाई, ग्रेडिंग एवं बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करें।
- टमाटर एवं बैंगन में फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार उपचार आसमान साफ होने की स्थिति में करें।
- वर्षा के दृष्टिगत मटर के बीज वाली फसल यदि काटने योग्य है तो काटकर सुरक्षित कर लें।

फल

- आम, आँवला, अमरूद, नींबू के नवीन बागों में भिण्डी, उर्द, मूँग, लोबिया का अंतःसस्यन करें।
- जुलाई से सितम्बर के मध्य लगाये गये आम, अमरूद, नींबू आदि के नवीन बागों में जो पौधे किन्हीं कारणोंवश मर गये हों तो उनके स्थान पर नये पौधे लगायें।
- आम में भुनगा कीट की रोकथाम हेतु फास्फोमिडान (0.6 मिली./ली. पानी) अथवा डायमेथोऐट/ क्वीनालफास (2.0 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- आम में खर्रा रोग से बचाव हेतु घुलनशील गन्धक (2 ग्रा./ली. पानी) तथा इसके 10–15 दिन बाद डाइनोकैप अथवा ट्राईडोमार्फ (0.6 मिली. प्रति ली. पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- पशुओं में मुँहपका, खुरपका रोग की रोकथाम हेतु टीकाकरण करायें। दिनांक 15 मार्च से डोर–टू–डोर प्रत्येक पशुचिकित्सालय द्वारा प्रत्येक ग्रामसभा के प्रत्येक घर में खुरपका एवं मुँहपका का टीकाकरण अभियान चलाया जायेगा। यह अभियान लगभग डेढ़ माह तक चलाया जायेगा। अतः पशुपालक इसका अवश्य लाभ लें।
- जायद चारा फसलों की बुवाई करें जिससे गर्मी के मौसम में भी पौष्टिक हरा चारा प्राप्त हो सके।
- इस सप्ताह मौसम की संभावित स्थिति को देखते हुए गोवंशीय पशुओं में गर्भ की सुरक्षा के दृष्टिगत उनको सुरक्षित स्थानों पर रखें।

मत्स्य पालन

- कामन कार्प का मत्स्य बीज हैचरियों पर उपलब्ध है मत्स्य पालक कामन कार्प के मत्स्य बीज का संचय करें।
- बड़ी मछलियों की निकासी कर विक्रय करें साथ ही मछलियों के स्वास्थ का निरीक्षण भी करें।
- शरीर भार का 2 से 3 प्रतिशत पूरक आहार मछलियों को प्रतिदिन दिन में एक बार अवश्य दें।
- नर्सरी तालाबों की तैयारी माह मार्च तक अवश्य पूर्ण कर लें।
- सिंचाई के साधनों को सुव्यवस्थित कर लें तथा तालाब के जल स्तर को 1 से 1.5 मीटर बनाये रखें।
- जिन तालाबों में मछलियों के शिकार माही 60 प्रतिशत तक निकाले जा चुके हैं ऐसे तालाबों में 5000 अंगुलिकाएं प्रति हेक्टेयर की दर से संचित करें।
- जो मत्स्य पालक अपनी ग्रामसभा के तालाब का पट्टा लेना चाहते हैं वो एस.डी.एम. कार्यालय में आवेदन करें जिसकी एक प्रति जिले के मत्स्य विभाग को भी उपलब्ध करायें।
- मत्स्य पालक अपने जनपद में स्थापित सहायक निदेशक मत्स्य/मत्स्य पालक विकास अभिकरण सम्पर्क में रहें।

रेशम

- पत्ती सुबह एवं शाम को तोड़ें एवं उन्हें भीगे गनी क्लाथ में संरक्षित किया जाये। इस हेतु लीफ चैम्बर का उपयोग करें।
- पत्ती का चुनाव कीट की अवस्था के अनुसार करें। प्रारम्भिक अवस्था में मुलायम एवं उत्तरावस्था में कीटों को परिपक्व पत्ती खिलाई जानी चाहिए।
- स्वतंत्र वायु प्रवाह की व्यवस्था करें।
- सफाई समय पर की जाए। कीट बेड को मोटा न होने दें।
- अत्यधिक घना कीटपालन न करें।
- फसल की सफलता हेतु ठंडे मौसम में द्विपज कीट पालन करें।

- पत्तों में समुचित परिपक्वता की प्राप्ति हेतु दो शहतूत फसलों के मध्य 60–70 दिनों की वृद्धि सुनिश्चित करें।
- प्रभावी कीटनाशक व फसल की सफलता हेतु पृथक कीटपालन गृह का निर्माण करें।
- कीटपालन गृह एवं समस्त कीटपालन उपकरणों का विशुद्धीकरण दो प्रतिशत फार्मेलीन से करें। खुले कीटपालन गृह के विसंक्रमण हेतु पांच प्रतिशत विरंजक चूर्ण घोल अधिक प्रभावी होता है।
- आदर्श कीट पालन कक्ष के अन्दर स्वास्थ्यकर दशाओं का सख्ती से पालन करें।
- आदर्श तापक्रम 25 डिग्री सेंटीग्रेड एवं आर्द्रता 90 प्रतिशत अवस्थाओं में रेशम कीट बीज का उष्मायन करें।
- 6श्ग4श् आकार की एक चंद्रिका में लगभग 1000 कीटों को प्रतिस्थापित करें।

वानिकी

- विलायती बबूल, अंवला के बीजों की बुआई रूट ट्रेनर/थैलियों में कर लें।
- अपनी पौधशाला के अंकुरण कक्ष में पौधों का प्रतिरोपण रूट ट्रेनर/पॉलीथीन थैलों में कर, छाया घर (शेड हाउस) में स्थानान्तरित कर लें।
- सुरक्षा व्यवस्था तथा क्षेत्रों में गड्ढा खुदान कार्य पूर्ण कर लें।
- अक्टूबर से मार्च के प्रथम पक्ष तक प्रदेश की झीलों में रहने वाले प्रवासी पक्षी मार्च प्रथम सप्ताह में वापस जाने हेतु झुण्ड में तैयार रहते है। इस समय इन पक्षियों को शिकारियों से सर्वाधिक खतरा रहता है। इस अवधि में शिकारियों की जानकारी होने पर इसकी सूचना निकटतम वनकर्मी को दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनाँक 20 मार्च, 2017 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

1. *मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की बैठकों की वैज्ञानिक संस्तुतियाँ वेबसाईट upcaronline.org पर भी उपलब्ध है।*
2. *मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियाँ इफ्को किसान संचार लि. के माध्यम से प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वायस एस.एम.एस. द्वारा प्रेषित की जा रही हैं।*

ह0

(राजेन्द्र कुमार)

महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।

2. निजी सचिव, राज्य मंत्री (श्री राजीव कुमार सिंह), कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, धर्मार्थ कार्य विभाग, उ.प्र. शासन, को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, राज्य मंत्री (श्री राधेश्याम सिंह), कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान तथा चिकित्सा शिक्षा विभाग, उ.प्र. शासन, को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
4. मा. सलाहकार, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन।
5. श्री एस.एन. श्रीवास्तव, स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
6. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन, को कृषि उत्पादन आयुक्त महोदय के सूचनार्थ।
7. निजी सचिव, अध्यक्ष, उपकार को अध्यक्ष महोदय, के सूचनार्थ एवं अवलोकनार्थ।
8. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
9. प्रमुख सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
10. प्रमुख सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
11. प्रमुख सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
12. प्रमुख सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
13. प्रमुख सचिव, नियोजन, योजना भवन, लखनऊ।
14. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, इलाहाबाद कृषि, तकनीकी एवं विज्ञान वि.वि., नैनी, इलाहाबाद को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
15. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड़, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
16. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ– 226001।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र. को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड़, लखनऊ।
20. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
21. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड़, लखनऊ।
22. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
23. निदेशक, पशुपालन, लखनऊ।
24. मुख्य वन संरक्षक, प्रचार–प्रसार, वन विभाग, वन भवन, डालीगंज, लखनऊ।
25. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
26. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद/ सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, तकनीकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
27. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
28. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
29. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
30. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
31. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
32. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
33. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
34. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
35. संयुक्त कृषि निदेशक शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।

36. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारियों को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
37. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
38. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों को **ई–मेल** के माध्यम से प्रेषित।
39. श्री ओमकार त्यागी, मैनेजर, इफ्को किसान संचार लि., इफ्को भवन, 8–गोखले मार्ग, लखनऊ–226001 को इस आशय से प्रेषित कि मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियों को वॉयस एस. एम.एस. के माध्यम से कृषकों को प्रेषित करेंगे।
40. निजी सचिव महानिदेशक को महानिदेशक, उपकार के सूचनार्थ प्रेषित।
41. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2017 की तृतीय बैठक दिनांक 8 मार्च, 2017 की उपस्थिति

1. प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उपकार।
2. डा. आई.एन. मुखर्जी, सहायक महानिदेशक, उपकार।
3. डा. जे.पी. गुप्ता, निदेशक, मौसम विभाग, अमौसी, लखनऊ।
4. श्री राम अवध यादव, ज्येष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य निदेशालय, मत्स्य भवन, 7 फैजाबाद रोड, बाबूगंज, निकट आई.टी. क्रॉसिंग, लखनऊ।
5. डा. कमलेश सिंह, संयुक्त निदेशक (प्रक्षेत्र), पशुपालन विभाग, बादशाह बाग, लखनऊ।
6. डा. ए.के. सोनी, सहायक निदेशक (रेशम), रेशम निदेशालय, गोमती नगर, लखनऊ।
7. डा. कौशल किशोर मिश्रा, साइंटिस्ट, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, कुर्सी रोड, लखनऊ।
8. डा. अश्विनी कुमार, प्रोजेक्ट साइंटिस्ट, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, कुर्सी रोड, लखनऊ।
9. डा. राम रतन वर्मा, वैज्ञानिक, मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।
10. डा. संजीव कुमार, सहायक महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
11. डा. महक सिंह, प्रोफेसर/वैज्ञानिक, तिलहन अनुभाग, च.शे.आ. कृषि एवं प्रौ. वि.वि., कानपुर।
12. श्री राजेश कुमार गुप्ता, संयुक्त कृषि निदेशक (सां.), कृषि भवन, लखनऊ।
13. डा. पंकज त्रिपाठी, संयुक्त कृषि निदेशक (धान्य फसलें), कृषि भवन, लखनऊ।
14. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
15. डा. सीताराम मिश्र, सहायक प्राध्यापक, कृषि मौसम विभाग, न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद।
16. डा. यू.पी. साही, सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान एवं सह-प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, स.व.पटेल कृषि एवं प्रौ. वि.वि., मेरठ।
17. डा. राजेश कुमार, सहायक प्राध्यापक, पादप प्रजनन विभाग, न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद।
18. सुश्री गीता त्रिवेदी, शाकभाजी प्रसार अधिकारी, उद्यान विभाग, 2 सप्रू मार्ग, प्रेम नगर, हजरतगंज, लखनऊ।
19. मो. शाहिद परवेज, उप गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, लखनऊ।
20. श्री विनय सिंह, सहायक निदेशक (कृषि रक्षा), मु., कृषि भवन, लखनऊ।
21. श्री शिवशंकर गुप्ता, डिप्टी रेंजर, कार्यालय मुख्य वन संरक्षक, प्रचार-प्रसार, वन विभाग।
22. श्री मनोज कुमार जैन, कंटेंट इंचार्ज, इफ्को किसान संचार लि., इफ्को भवन, 8 गोखले मार्ग, लखनऊ।
23. डा. बिपिन कुमार, वैज्ञानिक अधिकारी, (पर्यावरण विज्ञान), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
24. डा. पुष्पेन्द्र सरोज, वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि प्रसार), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
25. डा. अम्बरीष सिंह यादव, वैज्ञानिक अधिकारी (शस्य विज्ञान), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
26. डा. अश्विनी कुमार, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
27. डा. ज्ञानमंजरी राव, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
28. डा. संगीता यादव, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।

29. डा. सीमा खान, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
30. डा. जे.पी. मिश्रा, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
31. डा. अश्विनी यादव, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।
32. डा. संध्या यादव, तकनीकी सहायक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद।